महाभारत (अनुशासन पर्व 4.5-11)

पूज्या लालयितव्याश्च स्त्रियो नित्यं जनाधिप।

स्त्रियो यत्र च पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।।5।।

अपूजिताश्च यत्रैताः सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।

हे नरेश्वर! स्त्रियों को सदैव सत्कार व दुलार करना चाहिए। जहाँ स्त्रियों का आदर सत्कार होता है वहां देवता निवास करते हैं और जहां उनका अनादर होता है वहां सारी क्रियाएं निष्फल हो जाती है।

तदा चैतत् कुलं नास्ति यदा शोचन्ति जामयः।।6।।

जामीशप्तानि गेहानि निकृत्तानीव कृत्यया।

नैव भान्ति न वर्धन्ते श्रिया हीनानि पार्थिव।।7।।

जब कुल की बहू-बेटियाँ दुःख मिलने के कारण शोकमग्न होती है, तब उस कुल का नाश हो जाता है। वे खिन्न होकर जिन घरों को शाप दे देती है, वे कृत्या के द्वारा नष्ट हुए के समान उजाड़ हो जाते हैं। पृथ्वीनाथ! श्रीहीन गृह न तो शोभा पाते हैं और न उनकी वृद्धि ही होती है।

स्त्रियः पुंसां परिददे मनुर्जिगमिषुर्दिवम्।

अबलाः स्वल्पकौपीनाः सुहृदः सत्यजिष्णवः।।८।।

ईर्षवो मानकामाश्च चण्डाश्च सुहृदोऽबुधाः।

स्त्रियस्तु मानमर्हन्ति ता मानयत मानवाः।।९।।

स्त्रीप्रत्ययो हि वै धर्मों रतिभोगाश्च केवलाः।

परिचर्या नमस्कारास्तदायत्ता भवन्तु वः।।१०।।

महाराज मनु जब स्वर्ग को जाने लगे, तब उन्होंने स्त्रियों को पुरुषों के हाथ में सौप दिया और कहा-'मनुष्यों! स्त्रियां अबला, थोड़े से वस्त्रों से काम चलाने वाली, अकारण हित साधन करने वाली, सत्यलोक को जीतने की इच्छावाली (सत्यपरायणा), ईष्यालु, मान चाहने वाली, अत्यन्त कोप करने वाली, पुरुष के प्रति मैत्रीभाव रखने वाली और भोली-भाली होती हैं। स्त्रियाँ सम्मान पाने के योग्य है, अत: तुम सब लोग उनका सम्मान करो, क्योंकि स्त्री जाति ही धर्म की सिद्धि का मूल कारण है। तुम्हारे रतिभोग, परिचर्या और नमस्कार स्त्रियों के ही अधीन होंगे।

उत्पादनमपत्यस्य जातस्य परिपालनम्।

प्रीत्यर्थे लोकयात्रायाः पश्यत स्त्रीनिबन्धनम्।। ११।।

सम्मान्यमानाश्चैता हि सर्वकार्याण्यवाप्स्यथ।

सन्तान की उत्पत्ति, उत्पन्न हुए बालक का लालन-पालन तथा लोकयात्रा का प्रसन्नता पूर्वक निर्वाह स्त्रियों के ही अधीन समझो। यदि तुम लोग स्त्रियों का सम्मान करोगे तो तुम्हारे सारे कार्य सिद्ध होंगे।

Lecture by-

Dr. Ritu Mishra,

Department of Sanskrit,

Shivaji College.